

३८ श्रीबरो श्रीस्य लपूजा
संत २३ आसु क ७ श्रीजीव क
द्यावनी देव लिखिता ॥ ॐ ॥

ASHA ARCHIVES 3510

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ यथु देव स्वल्प पूजा विधिः ॥ यजमानेन विराचम् ॥ ३ चंद
न पुष्पाशिरसि भूषणं ॥ चन्दनाक्षतजलंगुही त्वा सूर्यार्घ्यं ॥ अद्यादि वाक्यं ॥ यज
मानस्य श्रीप्रचु श्रीचण्डेश्वर चण्डेश्वरी भट्टारकमुप्रीतये आयुर्गोप्ते अर्थज
यसि द्विकाप्रतया छागमहितं चोपचार पूजां कर्तुं श्रीसूर्यार्घ्यं नमः ॥ पुष्प
नमः ॥ पुष्पभाजनं स्पृशेत् ॥ ॐ शिवशक्तिस्वरूपाय व्याधिते वि अस्तु यिरो ॥
सर्वदुःखप्रशान्ताय नमस्ते भूतत्वापिने ॥ यजमानस्येति वाक्यं ॥ पुष्पभाज
नमः प्रयणं ॥ आचार्येन आचमनं ॥ ऐं स्वाहा ॥ ३ ॥ चन्दनाक्षतजलंगुही त्वा सूर्यार्घ्यं

यजमानस्य श्रीचरणे श्वचरणे श्वरी सुप्रीतये यथाशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं छागमहि
तयं वीर्यचार पूजां कर्तुं श्रीसूर्याय अर्घ्यं नमः॥ पुष्पं २॥ धूपो नमः॥ गुरुनमस्कारः अख
राउ मराउ लेति. मूलन्यासः॥ ऐं ५ अं अस्त्राय फट्॥ करशोधनं॥ ऐं ह्रिं अं अंगुष्ठाभ्यां नमः॥
ऐं ह्रिं तर्जनीभ्यां स्वाहा॥ ऐं ह्रिं प्रथमाभ्यां वौषट्॥ ऐं त्र्यं अनामिकाभ्यां हूं॥ ऐं अं करतल
अस्त्राय फट्॥ हृदयादि॥ ऐं ह्रिं हृदयाय नमः॥ ऐं क्षप्रशिरसे स्वाहा॥ ऐं ह्रिं शिरसायै वौष
ट्॥ ऐं त्र्यं कवचाय हूं॥ ऐं तुं नेत्रत्रयाय वषट्॥ ऐं अं अस्त्राय फट्॥ अर्घ्याव पूजा॥ ॥
ऐं ह्रां ह्रीं हूं ॐ प्रस्फुर २ चोर २ तरतु २ हयवत २ प्रबध २ कह २ वप्र २ डप्र २ घातय २
विघातय २ विघ्निर हूं २ फट् ॐ श्री महाकौमारी विघ्ने पादुकां पूजयाति॥ स्फूर्ति आ

नंद शक्ति प्रैर वानंद श्री प्रह्लाद विद्या राजे श्री धर्म श्री अर्च पात्र पादुकां पूजयापि ॥
यो निमुद्रा ॥ जल पात्र पूजा ॥ हैं ५ जल पात्र पादुकां पूजयापि ॥ धेनु मुद्रा ॥ आत्म
पूजा ॥ हैं आत्मने सिंचनं नमः ॥ हैं आत्मने चंदनं ॥ हैं आत्मने अक्षतं नमः ॥ श्री आत्म
ने सिंदूरं ॥ ह्यौ आत्मने पुष्पं ॥ ॥ मोहनीय ॥ इतालुना पुष्पा नावदनु तीव्रतया
सलीलसहं कारवोय ॥ चेतनस्थानतय पूजायाय ॥ हैं ह्यौ सर्वप्रोहिनी पादुकां पूजया
पि ॥ धूप चानात्र प्रालिनीयदये ॥ ततः पंचवलि ॥ हैं प्रमृतासन पादुकां पूजयापि
हैं ॥ जल पुत्र वदुकनार्थं बलिं गुरुत्वा हा हैं प्रमृतासन पादुकां पूजयापि ॥ हैं धांधी
क्षत्रपालाय बलिं गुरुत्वा हा ॥ हैं सिंहासन पादुकां पूजयापि ॥ हैं यां योगिनी भो व
गुरुत्वा हा ॥ हैं पुतासन पादुकां पूजयापि ॥ हैं श्री सिद्धिचापुष्पा पादुकां पूजया

मि॥
त्र
आत्म
नय।
नया
याप्रि
आंभी
यो व
जया

मिवलिंगं हृदस्वाहा॥ हे मूषासनया पू॥ हें गां गों गूं गें गों गः कुलगणेश्वराय वलिं
गृह्णस्वाहा॥ **मो नि मु डा**॥ समय **छाय** विंदुविय॥ योगिनीचक्रेति॥ **अत्रगं धादि**॥
वि व हि॥ संवर्त्तमणुलांते॥ हें दुं अतंतमणुल श्रीआदिदेव पा पू॥ हें नरासन पा पू॥
हें क्षां क्षां क्षुं क्षत्रपाल पा पू॥ हें प्रेयसासन पा पू वलिं॥ हें क्षां श्री क्षां कुलपुत्रवदक ना
थ पा पू॥ एवं वलि॥ हें गां गों गों गः जौ कुलगणेश्वर पा पू॥ एवं वलि॥ गजमुद्रा विंदु
अत्रगं धादि॥ देवया आसन पूजा॥ हें आधारशक्तये नमः॥ हें अतंतासनाय २॥ हें स्कं
दासनाय २॥ हें नालासनाय २॥ हें यमासनाय २॥ हें यज्ञासनाय २॥ हें केशासनाय २॥
हें कर्त्तिकासनाय २॥ हें नरासनाय २॥ ॥ ध्यानं ॥ हें ५ अक्षं कपालवरं दं रत्नं विं
गोर्द्ध केशकं। मणुलादि भूषां गं शुक्लं चतुर्भयं धृतं॥ ध्यानपुष्पं नमः॥ आवाह

र।

दत्त २

नमः॥ विशाखनाथपादुकां पूजयामि॥ अर्घ्यं नमः॥ स्नातं आचमनीयं वंदने सिद्धं॥ अधस्तं पु
ष्पं॥ त्रयांशुलि॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं विरावनाथपादुकां पूजयामि॥ इति वंदनं॥ ऐं
असितंगैरवधायू॥ ऐं हरहरैरव धौ पायू॥ ऐं बहुरैरवधायू॥ ऐं क्रोधभैरवधायू॥
ऐं उग्रभैरवधायू॥ ऐं कपालभैरव धौ पायू॥ ऐं प्रीषण भैरवधायू इत्येवं निगृह्य रत्न
हा॥ ऐं बुध्वादिपायू॥ ऐं प्रयोगादि पा यू॥ इत्येवं लिं॥ त्रिशूलमुद्रा॥ विन्दुत्रयं॥ इति
मूलदेवार्चनं॥ ॥ अथासलदेवीपूजा॥ आसनं॥ ओ धारणाकृतये नमः॥ ऐं अनंतसनाय
नमः॥ ऐं स्कन्दासनाय नमः॥ ऐं नालासनाय नमः॥ ऐं यज्ञासनाय नमः॥ ऐं पद्मासनाय नमः॥ ऐं के
शासनाय नमः॥ ऐं कर्णिकासनाय नमः॥ ऐं सिंहसायनाय नमः॥ ध्यातं॥ शुक्लवालार्कवर्णा
भां अक्षं रुद्रास्थिप्रबितां वराप्रयकारं ध्यायेद्याद्युर्वर्षवृतांकटौ॥ ध्यातुं पुष्पं नमः
आवाहनं॥ ऐं विशाखदेवैषां नमः॥ एवं अर्घ्यस्नात आचमन वंदन सिद्ध अक्षतपु

व्यं द्रष्टुं ॥ त्रयं जलि ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्यं ह्रौं मू ॥ विराचिते त्रयं जलि पुष्पं नमः ॥ ३ ॥ वसि
अं तुलाणी या पू ॥ ऐं कं माहे श्वरी या पू ॥ ऐं वं ॥ को मा ही या पू ॥ ऐं ँ वै श्वरी या पू ॥ ऐं तं वा
राही या पू ॥ ऐं यं इन्द्राणी या पू ॥ ऐं यं चापु ज्ञा या पू ॥ ऐं शं प्रहातक्षी या पू ॥ इमं वसिं ग
हूर स्वाहा ॥ जयादि ऐं जया या पू ॥ ऐं विजया या पू ॥ ऐं अजिना या पू ॥ ऐं अपराजिता या पू
॥ ऐं जयनी या पू ॥ ऐं तं प्रिती या पू ॥ ऐं प्रोहिनी या पू ॥ ऐं आकवरी या पू ॥ इमं वसिं ॥ इति ज
यादि ॥ रुद्र चण्डादि ॥ ऐं अं आं रुद्र चण्डा या पू ॥ ऐं इं ईं प्रचण्डा या पू ॥ ऐं उं ऊं चण्डोग्रा या पू ॥ कं
कं चण्डनायिका या पू ॥ ऐं लं लं चण्डा या पू ॥ ऐं एं एं चण्डवती या पू ॥ ऐं ओं ओं चण्डरूपा या
पू ॥ ऐं अं अं अतिचण्डिका या पू ॥ इमं वसिं गहूर स्वाहा ॥ आवाहनादि योनि मुद्रा ॥ विनुव
यं ॥ ३ ॥ इति मूल देवी पूजा ॥ अथ मूल नृत्ये श्वरार्चनं ॥ आसनं ॥ ऐं वृषभासन या पू

[illegible]

वी पा
क्ति
हित
इ
प
ग
ग
दे

वी पापू ॥ ३ ॥ एवं वलि ॥ फल प्रदा विदु ॥ ३ ॥ धन ज वस का थ डे पूजा ॥ आसतं ॥ हैं आ धा र श
 कि प्रो त म ॥ प्र पू ए स ना य न म ॥ त्रयां जलि ॥ हैं जीं जीं जीं जीं च एं भै र व ग ल को प्रा श शक्ति स
 हित पापू ॥ ३ ॥ एवं वलि ॥ शक्ति प्रदा विदु ॥ ३ ॥ ॥ ध्या मा नु र व व स इ डा णी पूजा ॥ आसतं ॥ हैं
 जीं इ डा णी दे वी पापू ॥ ३ ॥ एवं वलि ॥ ध्वज प्रदा विदु ॥ ३ ॥ जल धुनी स चारं ही पूजा ॥ आ
 सतं ॥ हैं आ धा रा दि प्रो त म ॥ हैं प्र ति वा स न पापू ॥ त्रयां जलि ॥ हैं वां वां वूं वां वां ही पां पू ॥ ३
 एवं वलि ॥ को ल प्रदा विदु ॥ ३ ॥ ध्या मा नु प्री प्र से न पूजा ॥ आसतं ॥ हैं आ धा र श कि प्रो त म ॥ हैं
 पद्मा स ना य न म ॥ त्रयां जलि ॥ प्री प्रीं प्रूं प्रूं प्री प्र से न पापू ॥ ३ ॥ एवं वलि ॥ यो त्रि प्रे डा ॥ ॥ दू ते
 ग गे श पूजा ॥ आसतं ॥ हैं आ धा रा दि प्रो त म ॥ हैं प्रू वा स ना य न म ॥ त्रयां जलि ॥ हैं जीं जीं जीं
 जीं जीं श्री गण पति पापू ॥ ३ ॥ एवं वलि ॥ गज प्रदा विदु ॥ ३ ॥ ॥ ध्या मा नु च प्रदा पूजा ॥
 आसतं ॥ हैं आ धा रा दि प्रो त म ॥ हैं प्रे ता स ना य न म ॥ त्रयां जलि ॥ हैं वां वां वूं वां श्री वा प्रदा
 दे वी पापू ॥ ३ ॥ एवं वलि ॥ महा प्रदा विदु ॥ ३ ॥ इति पूजनं ॥ ॥ स गण पूजा ॥ हैं अंश वु स्थानां च

सुविंजति विष्णो नमः एवं वरि ॥ ध्यान वलि मोले ॥ ऐं अं उं अं अं सितंग भैरवाय वलिंगु हूर स्वा
हा ॥ ऐं ईं ईं हूर भैरवाय वलिंगु हूर स्वाहा ॥ ऐं उं उं वल भैरवाय वलिंगु हूर स्वाहा ॥ ऐं अं अं के
ध भैरवाय वलिंगु हूर स्वाहा ॥ ऐं लं लं उं अं न भैरवाय वलिंगु हूर स्वाहा ॥ ऐं ऐं ऐं कयाल भैर
वाय वलिंगु हूर स्वाहा ॥ ऐं ओं ओं श्री घण भैरवाय वलिंगु हूर स्वाहा ॥ ऐं अं अं संहार भैरवाय
वलिंगु हूर स्वाहा ॥ ऐं बुद्धा रणादि भो वलिंगु हूर स्वाहा ॥ ऐं प्रयाग भो त्राधिय विष्णो वलिंगु हूर
स्वाहा ॥ ऐं जयादि भो वलिंगु हूर स्वाहा ॥ ॥ नमः सप्रय वलि ॥ सर्व धी हो य धी ठानि ह्रीं य हूर प्रे
वच ॥ क्षेत्रोप क्षेत्र संधो हूर सर्व दिग्भाग संस्थिता ॥ ऐं सप्रय मंत्र धी ठानि सप्रय धी ठो धी हो य धी ठ
क्षेत्रोप क्षेत्र संधो हूर दिव्य सिद्धि सप्रय वक्र पायू ॥ वलिंगु हूर स्वाहा ॥ ऐं उं कानु कानु यत कं वित
सर्व हृदयाय वलिंगु हूर स्वाहा ॥ इति सप्रय वलि ॥ ध्यान वलि कर्म या वलि न मोले ॥ विदुः
यं ३ ॥ लहान सिये ॥ ॥ सप्रय वलि ॥ ऐं अं नं संहार संधि वं रं सै व ५ ॥ सप्रय वलि ॥ इदं नै वं य
हे विष्णो वनाथ हे पिशाचि श्री भो वलिंगु हूर स्वाहा ५

रत्ना
कुंके
प्रेर
वाय
गुरु
रुपे
पवीठ
कवित
रुपे
वैवध

कंतु भंगु हा हा पर प्रेश्वरि ॥ ॥ धूप ॥ दीप जय ॥ तिसा मल मधि दाय ॥ ताय हो ले ॥ मनो जूति
तनो जय ॥ रें गे ॥ १० ग गो राया ॥ रें दू ॥ सु ॥ मूलया ॥ १० ॥ रें दू ॥ सु ॥ नृत्ते श्याया १० ॥
मरुत दय के ॥ सोत्र पदये ॥ श्री ल ॥ सु ॥ वत्त मरुत लाने ॥ सु ॥ सु ॥ बुलाणी क प्रलेतु
॥ सर्व प्रगत प्रांगत्ये शिवे सर्वार्थ सा ॥ सु ॥ सु ॥ धिके मरुतये ॥ सु ॥ सु ॥ स्वके देवि नायाति
नमो लुते ॥ विधे श्याय वी राय वि श्व ॥ सु ॥ पायने नमः ॥ सर्व वि धु ह ॥ र देव सर्व शाति का
हेतु मे ॥ इन्द्रा क्षी सोत्र ॥ यथा वा हा पु हा हा क वच भवतु वार हा तत्र दे व वि घाता नां शांति प्र
वतु वार हा ॥ जोत्रा स्य त द्वाग सहित यं तो य चार पूजा संपूर्ण विधीत सर्व विधि परि पूर्ण
मस्तु ॥ मरुत ला व स र्जन ॥ ला हा त सिथा ॥ नमस्कार दक्षिण तय देव यात ॥ ॥ यना चो चि पू
जा ॥ वलि म फल के ॥ चन्दना क्षत पुष्प तया ॥ पूजन ॥ रें ५ ॥ श्री ॥ राज प्रदे व ॥ उगु च गोर
पु

रामर्दिनि हूं प्रें सदारक्ष त्वां मां जुं सः मत्सु हरेतमः स्वाहा ॥ ३ ॥ स्तोत्रं ॥ रवजनाथाय रवर नाराय
शक्तिकार्ययतनपरः ॥ पशुं ह्येदं त्वया सीधुं रवजनाथन मोक्षते ॥ अत्र गंधादि ॥ देवया थाय सपशु ह
यः लंखन पंचांगस्त्रानः चन्दन सिंदूर पुष्प पूषाणां ॥ अस्त्रेण संरक्ष्य कवचेनावगुंठनं ॥ धेनुमुखा ॥ स
मयनके ॥ प्रतविय आज्ञा मंत्रकने ॥ हें ह्रीं श्रीं स्त्र्यं ह्रीं ॥ पापप्रक्षालीय स्वाहा ॥ जलाक्षतकाया
वज्रवृक्षसपोतसगायत्रीकने ॥ हें पशुपाशाय विप्रहे ॥ विश्वकर्माय धीमहि तन्नो भोक्षः प्रचोद
यात् ॥ जलाक्षतपुष्पकायावसंकल्प ॥ अष्टोत्पाद ॥ वावयं गोत्रनाम यजमानस्य मनोवां
छापापुष्पि श्रीप्रक्षाली तरोः श्वराभहारकायै आयुषो मे ॥ श्वर्यजयसिद्धिका मतार्थ इ प्रंछा
गवालं अग्निदेवतं तु यमं संप्रददे ॥ प्रहायके ॥ स्तोत्रं पशुं गृहं तु देवेश प्रजया उपयावि
ते आप्यापि स्वर्गसंप्राप्ति ईश्वर त्वं प्रयच्छ मे ॥ पूर्वजन्मकृतं पार्ष पशुजन्म न जायते ॥ सर्वपापविनि
र्मुक्तस्वर्गलोकसंगच्छति ॥ पशुयापुष्टुछाय ॥ प्रतविय समय छाय तु कत छाय ॥ देवजीये प्रणु

नारायण
मयभूत
मुद्रा॥ स
तकाया
मः प्रवोद
मनोवा
उपेक्षा
यावि
पापविनि
ये प्रण

त जय सोमं श्री संवत् बुधराणीक मलेयुः सर्वप्रगल्भप्रगल्भे वाक्यं यजमानस्य
श्रीमत्तु च एव श्री ह्यगमहित पंचोपचार पूजा संपूर्णार्थं तत्सर्वं विधिपरिपूर्णा प्रस्तु ॥ प्रण
सोमं स्नानं द्रुय ॥ प्रण लक्ष्मि नके लाहातिये ॥ सप्रयवोक्त न ह्यय ॥ सगुण मोहनी ह्यय
वाक्य पूजावने ॥ आचार्य पूजनं दक्षिणांतं ॥ सकलयातं अपिषेक वेत पिदूर मोह
नी सगुणा विषय देवमास्तोत्रन ॥ न्यास लोकाय ॥ ऐं अं अस्त्राय फ ॥ ऐं ह्रं अंगुष्ठायांतप्रः
ऐं क्षमर्जनी भ्रां स्वाहा ॥ ऐं लंबं प्रध्यायां वीष ॥ ऐं न्यं अनापिका ॥ ऐं ह्रं ऐं कुं कनिष्ठा ॥ ऐं वं
ष ॥ ऐं अं करतल अस्त्राय फ ॥ हृदयादि ॥ ऐं ह्रं हृदयाय नमः ॥ ऐं धमेतिरेस्वाहा ॥ ऐं लंबं
शिखायै वीष ॥ ऐं न्यं कवचाय ॥ ऐं कुं नेत्रत्रयाय वष ॥ ऐं अस्त्राय फ ॥ ॥ वलिथो म
ऐं वं ऐं श्राय फ ॥ संहार मुद्रा ॥ सूर्य साक्षि ॥ यजमानस्य च एव श्री ह्यगमहित प
वोपचार पूजा संपूर्णार्थं कृतक प्रणः साक्षि सूर्यमि अर्घ्यं नमः ॥ पुण कोकाय हने

ASHA ARCHIVES
3510

सिद्धिदायक